sneo, snê id., gen. *snewe-s*; lith. *snẽga-s* id., mutato *w* in *g*, v. gr. comp. 19.; slav. *snjeg* id.; gr. *νέω, νεύ-σω* e *σνέϝω, σνεύ-σω*; hib. *snuadhaim* «I flow, stream», *snuadh* «blood», *sneachd* nix; germ. vet. *SNUZ* emungere, adjecto *z*, v. gr. comp. p. 109[b]. 1.)

स्नुच् 1. *A.* (प्रसादे) propitium esse.

स्नुषा *f.* (ut videtur, a सूनु filius ejecto ऊ, vid. Höfer, *Beiträge* p. 393.) nurus. H. 1.32. (Germ. vet. *snur, snura*; slav. vet. *snocha* (χ = ś, v. gr. comp. 255. *m.*); lat. *nurus*, gr. *νυός*.)

स्नुस् 4. *P.* (भक्षे) edere.

स्नुह् 4. *P.* (उद्गारे) evomere.

स्नेह *m.* (r. स्निह् s. अ) 1) amor, *c. loc. r.* Br. 1.30. H. 1. 22. 2.20. Sa. 5.21. 2) pingue, adeps, oleum. R. Schl. II. 64.68.

स्पन्द् 1. *A.* (scribitur स्पद्, gr. 110[a].) palpitare, *zucken*. Sak. 150.15.: किम् बाहो स्पन्दसे· — स्पन्दित *n.* tremitus. Ur. 40.5. (Cf. स्फर्, स्फुर्, स्फल्.)

c. वि reniti. Mah. 3. 445.: स भीमेन परामृष्टो ... व्यस्पन्दत यथाप्राणं विचकर्षच पाण्डवम्·

स्पर्ध् 1. *A. interdum P.* 1) aemulari, certare, contendere, *c. instr.* A. 7.17.: स्पर्धमाना इवा ऽस्माभिः; Mah. 3.744.: मया स्पर्धन्ति· — *Etiam adjectâ praep.* सह· Mah. 2. 485.: सह शक्रेण स्पर्धते· 2) aequare, aequalem esse, *c. acc.* Mah. 3. 15292.: राजसूयङ् क्रतुश्रेष्ठं स्पर्धत्य् एष महाक्रतुः; 1. 205. 4991.

c. वि aemulari. Mah. 1. 1088. 4346.

स्पर्श् 10. *A.* (ग्रहणे *K.* ग्रहणे श्लेषे *V.*) capere, sumere, amplecti. (Vid. स्पृश् quod correptum e स्पर्श्.)

स्पर्श *m.* (r. स्पृश् tangere s. अ) 1) contactus. Bh. 5.21. 2) aura, ventus. A. 5.14.

स्पर्शन *n.* (r. स्पृश् s. अन) tactus. Bh. 15.9.

स्पश् 1. *P. A.* (बाधने *K.* ग्रन्थबाधयोः *V.*) 1) vexare. 2) jungere, nectere, serere, componere. *In dial. Vêd.* facere, perficere. Rigv. 10.2.: भूर्य् अस्पष्ट कर्वम्; 22. 19.: व्रतानि पस्पशे· (*Vid.* 1. पश्.)

c. वि विस्पष्ट manifestus. विस्पष्टम् *Adv.* manifesto, aperte. In. 5.39.

स्पृ 5. *P.* (प्रीतिरक्षणप्राणनेषु) 1) exhilarare. Rigv. 36. 10.: धनस्पृत· 2) servare, custodire, tueri. 3) vivere.

1. **स्पृश्** 6. *P. interdum A.* tangere. In. 2.23.: मुखम् पस्पर्श ... करेण; R. Schl. II. 64.59.: मां स्पृश; II. 42.6.: मामकाङ्गानि मा स्प्राक्षीः; Dr. 6.23.: मा वः प्रियायाः ... वदनम् प्रसन्नं स्पृश्याच् कुभङ् कश्चित्; Sa. 4. 22.: न मान् दोषः स्पृशेद् अयम्; Man. 2.60.: खानिचै ऽव स्पृशेद् अद्भिः; Mah. 3. 8236.: जलं स्पृशते· — स्पृष्ट tactus. — *Caus.* 1) facere ut quis tangat, *c. 2. acc.* Man. 8.114. 2) dare. Man. 11.135.: स्पर्शयेद् (schol. दद्यात्) ब्राह्मणाय गाम्· (Lat. *spargo.*)

c. अप tangere. Mah. 1.764.: अपो ऽपस्पृश्य·

c. उप 1) tangere. H. 3.20.: दन्तैर् दन्तान् उपस्पृशन्; N. 7.3. — Man. 4.143.: अद्भिः प्राणान् उपस्पृशेत्· 2) os abluere (tangere aquâ). Man. 2.: उपस्पृश्य द्विजो नित्यम् अन्नम् अद्यात् ... भुक्त्वाचो ऽपस्पृशेत् सम्यक् (schol. आचम्य, आचामेत्). 3) se lavare, *se baigner.* Man. 5. 62.: उपस्पृश्य पिता शुचिः; Mah. 3. 10529.: अत्रो ऽपस्पृश्य·

c. उप praef. परि tangere. Mah. 3.165.: गाङ्गेयम् (Gangis aquam) पर्युपस्पृश्य·

c. उप praef. सम् 1) tangere. Mah. 3. 8022.: यमुनाप्रभवं समुपस्पृश्य यामुनम् (Yamunae aquam). 2) se lavare, *se baigner.* Mah. 3. 10530.: अत्रा ऽपि समुपस्पृश·

c. परि tangere. R. Schl. I. 9.38.: परिपस्पृशिरेचै ऽनम् पीनैर् उरसिजैः·

c. सम् *id.* N. 23.14. H. 1.49. Man. 2.53.

2. स्पृश् (*Nom.* स्पृक्, r. स्पृश्) tangens, *in fine comp.* N. 12.37.: दिविस्पृश्·

स्पृश (r. स्पृश् s. अ) *id., in fine comp.* Bh. 11.24.: नभःस्पृश·

स्पृष्ट v. स्पृश्.

स्पृह् 10. *P. interdum A.* स्पृहयामि, स्पृहये desiderare,